रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67 / 2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गजट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –38 ● अंक –16 ● कानपुर 16 से 31 अगस्त 2016 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹100

आन्दोलनों की दुकानें बन्द होनी चाहिये

- आन्दोलनों का स्वरुप पारदर्शी हो
- हित में नहीं जनहित में हों आन्दोलन
- जग हँसाई न होने दें
- मान्यता कोई रोक नहीं सकता
- प्रयास हों सकारात्मक
- अफवाहें अस्थिरता को जन्म दे रही हैं
- विवेक एवं संयम से लें काम

आज सारे भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए विभिन्न तरह के आन्दोलन चलाये जा रहे हैं इन आन्दोलनों का परिणाम कितना अच्छा होगा यह तो हर आन्दोलन चलाने वाला जानता है, पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की लड़ाई लड़ने वालों की एक लम्बी श्रंखला है और ये सारे के सारे लोग अपने–अपने ढंग से मान्यता की लड़ाई लड़ रहे हैं लेकिन निष्पक्षता से विचार किया जाये तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाता है कि इस लड़ाई को कौन वास्तविक रूप से लड़ रहा है ? सत्यता तो यह है कि अधिकांश आन्दोलन करने वाले हमारे नेतागण अपने व्यक्तिगत हितों को ऊपर रखकर यह लड़ाई लड़ रहे हैं, लड़ाई का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता, जिसको जो समझ में आता है उसी का प्रचार करना शुरू कर देता है।

हम भी मान्यता के पक्षधर हैं जैसा कि हम कई बार लिख चुके हैं लेकिन मान्यता जिस ढंग से लेनी चाहिये उसका एक प्रारूप होना चाहिये, जो नीति बनायी जाये वह स्पष्ट और पारदर्शी हो और उस नीति पर यदि सर्वसम्मति न बन पाये तो कम से कम 60 प्रतिशत लोगों का समर्थन तो प्राप्त हो ही, इसका लाभ यह होगा कि कोई भी किसी भी नीति का आसानी से विरोध नहीं कर पायेगा, अभी तक जितने भी आन्दोलन हुए हैं उन्हें सफलता इस लिए नहीं मिली है क्योंकि आन्दोलन करता यह स्वयं तय करता है कि उसे आन्दोलन का क्या स्वरूप देना है ?जो आन्दोलन दीर्घ कालीन और जनहित से जुड़े होते हैं उन्हें सफलता तो अवश्य मिलती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन अन्य आन्दोलनों से प्रथक है क्योंकि यह आन्दोलन सीधे– सीधे मानव जीवन से जुड़ा है इलेक्ट्रो होम्योपैथी पिछले 125 वर्षों से इस देश में अपना प्रचार व प्रसार कर रही है, एक शताब्दी से अधिक समय बीत जाने के बाद भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुआ है जबकि इसकी समकालीन अन्य चिकित्सा पद्धतियां काफी आगे निकल चुकी हैं। यह एक चिन्तन का विषय है कि आखिर ऐसा क्यों है ? जब–जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की बात आती है तो मान्यता देने वाले अधिकारी इस चिकित्सा पद्धति की तुलना अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों से करते हैं और जब तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है तो परिणाम यही आता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का अभी उतना विकास नहीं हुआ जितना की किसी मान्यता पाने वाले चिकित्सा पद्धति के लिए होना चाहिये। किसी भी अधिकारी का यह कहना बड़ा आसान होता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का स्तर वह नहीं है जो होना चाहिये लेकिन सच्चाई यह है कि सन 1953 के बाद क्या किसी सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्यों का मूल्यांकन किया है ?इस चिकित्सा पद्धति से कितने असाध्य और मृत्यु के मुहाने में बैठे रोगियों को लाभ मिला है ?क्या कभी किसी ने यह जानने का प्रयास किया कि कैंसर जैसी गम्भीर और जटिल रोगों में इस चिकित्सा पद्धति की जो दावेदारी है उसकी वास्तविकता क्या है ?सत्य तो यह है इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने वाले का कभी भी समर्थन नहीं किया गया, हास्य और उपेक्षा का दंश झेलते–झेलते हमारे चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यहाँ तक ला पाये हैं, विपरीत परिस्थितियों में काम करना और काम के परिणाम लेना इस बात के स्वतः प्रमाण होते हैं कि कार्य करने वाले की कुशलता पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता है।

यह तो हम सबके सामूहिक प्रयासों का परिणाम है कि 5–5–2010 और 21–6–2011 जैसे महत्वपूर्ण आदेश आज हमारे पास हैं और यह आदेश हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ को कार्य करने का अधिकार देते हैं लेकिन जो वैधानिकता हमें मिलनी चाहिये यह हमें संघर्ष करते हुए मिली है, इसे अक्षुण रखना हमारा दायित्व है।

मान्यता के लिए संघर्ष करना भी हमारा कर्तव्य है लेकिन इस संघर्ष को जो दिशा मिलनी चाहिये वह दिशा भर्मित हो चुकी है बार–बार आश्वासनों के बाद जब हमारे आन्दोलनकारी सफलता नहीं पाते हैं तो साथियों में निराशा और अविश्वसनीयता का भाव पैदा होता है और लोगों का जुड़ाव धीरे–धीरे खत्म होने लगता है, पहले एक संगठन ने देश व्यापी आन्दोलन चलाया, हर प्रदेश का दौरा किया, जगह जगह मीटिंग की गयीं, लोगों को जोड़ा गया, सदस्य बनाये गये, जनभावनायें उभारी गयीं और ऐसा प्रस्तुत किया गया कि जैसे उनसे पहले किसी ने कोई आन्दोलन ही नहीं किया।

स्वरूप तो ऐसा बनाया गया कि शायद अब मान्यता मिल ही जायेगी। एक निश्चित तिथि भी दे दी गयी और कहा गया कि इस तिथि तक मान्यता अवश्य मिल जायेगी, यदि सरकार ने घोषित तिथि तक मान्यता नहीं दी तो आर–पार की लड़ाई होगी, तिथि भी पार हो गयी, आर–पार की लड़ाई भी हो गयी, पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कुछ नहीं मिला, मिला तो बस सिर्फ आन्दोलनकारियों द्वारा दिया गया कोरा आश्वासन। इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए तरह तरह के उपक्रम किये गये, पुराने साथियों को गाली दी गयीं, जो पुराने आन्दोलनकारी थे उनकी जमकर आलोचना और भर्त्सना की गयी या दूसरे शब्दों में कहा जाये तो पुराने साथियों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का बाधक और खलनायक तक बताया गया। मनुष्य का स्वभाव होता है परनिन्दा सुनने में उसे आनन्द बहुत आता है लेकिन इसका परिणाम क्या हुआ ?एक और धड़ा है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए राजनैतिक प्रयासों को मान्यता का सबसे बड़ा हथियार मानता है इसके लिए केन्द्रीय मंत्रियों से मिलना, विभागीय मंत्रियों से मिलने का प्रयास करना, मिलकर अपनी बात कहना, यह बात तो अच्छी है लेकिन इसका जो प्रस्तुतीकरण किया गया वह बहुत ही नाटकीय है।

कुछ लोग किसी मंत्री के दफ्तर में जाकर उसे मिले, प्रास्पेक्टस का विमोचन कराया और प्रचारित किया कि मान्यता पर च च ा हु ई। सोशलमीडिया के माध्यम से पूरे देश को यह बताने का प्रयास किया कि मान्यता के लिए सिर्फ वही प्रयास कर रहे है। एक और धड़ा है जो सदन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का बिल लाकर उस पर चर्चा कराना चाहता है और सदन में बिल पास करवाकर विधेयक बनवाते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता दिलवाने का प्रयास कर रहा है। यह भी एक रास्ता है, इस रास्ते से भी मान्यता मिल सकती है, लेकिन किसी भी बिल को प्रस्तुत करने के पहले उसके लाभ और हानि के बारे में अवश्य विचार कर लेना चाहिये, सरकारी बिल और प्राईवेट मेम्बर बिल दोनों के पास होने में बड़ा अन्तर होता है, प्राईवेट मेम्बर बिल के सम्बन्ध में पहले तो सरकार यह परीक्षण करती है कि इस बिल को सदन में रखा जाये या नहीं यदि किसी तरह सदन में आ भी जाता है तो चर्चा में कितने सांसद इस बिल का समर्थन करेंगे! लोकसभा के बाद राज्य सभा में इस बिल की गति क्या होगी ?और सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि यदि बिल गिर जाये तो क्या स्थिति होगी ?तर्क देने वाले तो यह कहेंगे कि बिल गिर जाने या पास हो जाने के भय से इस क्षेत्र में काम न किया जाये।

ऐसा नहीं हो सकता प्रयास हर तरह से करना चाहिये लेकिन जो कदम उठाये जायें पहले उस पर गम्भीर विचार मंथन होना चाहिये उसके बाद कार्य होना चाहिये लेकिन आज स्थिति यह नहीं है व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और प्रचार पाने के लोभ में तरह–तरह के हथकण्डे अपनाये जा रहे हैं, अपने सिद्धक साधकों के माध्यम से कुछ बातें ऐसी प्रचारित की जाती हैं जिनके दूरगामी परिणाम बहुत खतरनाक होते हैं।

बिल को लेकर जिस तरह का भ्रम फैलाया गया उसने अविश्वसनीयता को जन्म दिया है, लोग एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं! एक सज्जन ने तो इतने विश्वास से प्रचारित किया कि सोमवार दिनांक 8 अगस्त, 2016 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी का बिल सदन में चर्चा के लिये लाया जायेगा यह सज्जन भूल गये कि 8 अगस्त, 2016 के दिन, इस सरकार का महत्वाकांक्षी बिल जीएसटी पर चर्चा होनी है, चूंकि 8 अगस्त– अगस्त क्रांति का दिन भी होता है इसलिए इस दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी का बिल कैसे आता ?

इस तरह के दावे समाज में भ्रम के साथ–साथ अविश्वास को जन्म देते हैं कुछ लोगों ने भ्रम फैलाया कि बिल पास हो गया है, सरकार मुहल्ला क्लीनिक खोलेगी इन क्लीनिकों में इलेक्ट्रो होम्योपैथों की सेवायें ली जायेंगी, भ्रम फैलाने वाला यह भूल गया कि मुहल्ला क्लीनिक की योजना दिल्ली राज्य सरकार की है न कि केन्द्र सरकार की, दूसरी बात यह नहीं भूलना चाहिये कि बिल पास होते ही नौकरियां नहीं मिलने लगती हैं,इस तरह के आन्दोलनों के झूठे प्रचार से लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अगुवाकारों की छवि धूमिल हो रही है, सहयोग करने वाले छिटक रहें हैं विश्वसनियता की हालत यह है कि लोग एक दूसरे को मनचाहा कह देते हैं अगर इस प्रकार के आन्दोलनों पर लगाम नहीं लगाई गयी तो ऐसे छद्म इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सेवक सब कुछ खत्म कर देंगे।

ऐसे भ्रामक आन्दोलनों को आप ही रोक सकते हैं।

सूचना

4 सितम्बर को A Saga of Electro Homoeopathy फिल्म का लोकार्पण स्थगित कर दिया गया है क्योंकि 4 एवं 5 सितम्बर को एक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संगठन द्वारा दिल्ली में ही एक कार्यक्रम आयोजित हो रहा है।

विवेकहीन सोच

इधर पिछले कुछ दिनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जिस तरह के विचार आ रहे हैं ऐसे विचार ना तो विचार करने वाले व्यक्ति का भला कर सकते है और ना ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला कर सकते हैं, दूसरे शब्दों में यदि इसे परिभाषित किया जाये तो उसका भाव यही निकलता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कर्ताओं–धर्ताओं की सोच विवेकहीन हो चुकी है, यह बात सच है कि वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक बार फिर से सन्नाटे की ओर कदम बढ़ा रही है, क्योंकि जिस प्रकार की गतिविधियां इलेक्ट्रो होम्योपैथी में संचालित की जा रही हैं वह कहीं से भी उचित नहीं कही जा सकती हैं इसका एकमात्र कारण यह है कि आजके जो स्वयंभू इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेतृत्वकर्ता हैं उनका मनोबल इतना गिर चुका है कि उन्हें प्रगति का कोई मार्ग नज़र नहीं आ रहा है परिणामोंस्वरुप ऐसे लोगों ने शायद यह निर्णय ले लिया है कि जब तक जो अर्जित हो सके उसका तत्काल अर्जन कर लिया जाये इसके लिये मार्ग चाहे जो भी चुनना पड़े और यही लघु मार्ग इलेक्ट्रो होम्योपैथी को दूरगामी नुकसान पहुँचा रहा है।

आपको याद होगा कि पिछले दिनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का बिल सदन में आने की काफी चर्चा थी बिल का स्वरूप क्या होगा ? बिल सदन में पास होगा कि नहीं होगा इसपर भी कोई विचार नहीं किया गया और इस बिल का इतना प्रचार कर दिया गया कि ऐसा लगने लगा कि बिल आते ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल जायेगी और सारे कष्ट दूर हो जायेंगे, बिल की सच्चाई क्या है ?यह कभी भी नहीं बताई गयी, जिससे जो हमारा सीधा सादा चिकित्सक है वह असमंजस की स्थिति में पड़ गया, बार–बार लोकसभा और राज्यसभा में बिल पेश होने की चर्चा की जाती है इन्हीं सब बातों को सुनकर किसी जागरूक इलेक्ट्रो होम्योपैथ ने अपने नेतृत्वकर्ता से प्रश्न कर दिया कि यदि बिल पास नहीं हुआ तो क्या होगा ? इस सीधे सवाल का बेतुका सा जवाब आया बिल नहीं पास होगा तो कोई बात नहीं कम से कम लोकसभा और राज्यसभा में अपने अपने क्षेत्रों का नेतृत्व करने वाले सांसदो को तो यह पता लग जायेगा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी क्या होती है और यह चिकित्सा पद्धति भी मान्यता के लिए संघर्षरत है। जब कि सच्चाई यह है कि जब भी कोई बिल गिरता है तो यह संदेश आता है कि सरकार इस विषय को जानना तो दूर सुनना तक नहीं पसन्द करती है, दूसरा बिन्दु यह भी है कि यदि बिल को मात्र प्रचार के लिए या गर्मी बनाये रखने के लिए एक वर्ष से अधिक समय तक लटकाया गया तो उस बिल की महत्ता स्वतः समाप्त हो जाती है इसलिए इस तरह के अविवेकपूर्ण विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कभी भी भला नहीं कर सकते हैं अपितु यह दुष्परिणाम अवश्य दे देंगे कि लोगों के मन में अविश्वस्नीयता का भाव अवश्य जागृत हो जायेगा। किसी कार्यक्रम को किसी मंत्री के कार्यालय में आयोजित कर खुद तो महिमामण्डित हो सकते हैं लेकिन समाज को इसका क्या लाभ होगा ? यह तो वही लोग जानते हैं जो कि इस तरह के कार्यों में लिप्त हैं, अजीब सी विडम्बना है कि कल तक जो स्वयं राष्ट्रीय नेतृत्व करते थे वर्तमान परिस्थितियों से इतना डरे हुए हैं कि दूसरे की बैसाखी का सहारा लेकर अपने आप को चमकाने का असफल प्रयास कर रहे हैं, जो सितारा स्वयं उधार की रोशनी से प्रकाशित होने का प्रयास कर रहा है वह दूसरे को कितना सहारा देगा ?यह तो लेने और देने वाले जाने, हताशा तो इस कदर बढ़ चुकी है कि लोग बाग यही नहीं विचार कर पा रहे हैं कि इधर जायें कि उधर जायें यह बात सर्वविदित है कि 25–11–2003 के निर्देशानुसार अभी तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को डाक्टर शब्द प्रयोग करना वर्जित है, इस लड़ाई को लड़ने के बजाये कहा जाता है कि योगा और नेचुरोपैथी का कोर्स कर लो डाक्टर शब्द लिखने लगोगे। जब इस तरह की मानसिकता जन्म ले लेती है तो ऐसे लोग कभी भी सक्षम नेतृत्व नहीं दे सकते हैं आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास प्रैक्टिस के सारे अधिकार हैं हमें भटकने की कोई आवश्यकता नहीं है और जो लोग भटकाव पैदा कर रहे हैं उनसे हमें दूर रहना होगा क्योंकि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास का जो रथ आगे बढ़ चुका है वह रूक नहीं सकता अस्तु अविवेकपूर्ण विचारों को त्याग कर विवेकी विचारों के साथ लक्ष्य को प्राप्त करें कार्य से ही सफ़लता है सफलता आपकी प्रतीक्षा में है।

बिल – से बाहर आना ही होगा

पिछले कुछ महीनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का बिल काफी चर्चा में है, हर तरफ बिल आने और बिल पास होने की बात होती है, बिल को इतना प्रचारित किया जा रहा है कि ऐसा लगता है कि शायद बिल के आते ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल जायेगी और सारे दर्द दूर हो जायेंगे। इस बिल के सन्दर्भ में गज़ट के माध्यम से हम पाठकों को काफी कुछ जानकारियां दे चुके हैं इसके उपरान्त भी हमारे चिकित्सक गण अभी भी बिल के मोह से बाहर नहीं आ पा रहे हैं हम इस बात से इंकार नहीं करते हैं कि बिल नहीं आना चाहिये, बिल भी आना चाहिये इसमें चर्चा भी होनी चाहिये और चर्चा के बाद बिल को पारित भी होना चाहिये, चूंकि यह बिल किसी व्यक्ति विशेष या समाज विशेष से जुड़ा नहीं है बल्कि इस बिल के अन्दर लोक कल्याण की भावना निहित है, यदि यह बिल पास हो गया तो पूरे देश में 5 लाख की अनुमानित संख्या में प्रैक्टिस कर रहे चिकित्सकों का भला होगा, साथ ही साथ इस चिकित्सा पद्धति में नये शोध भी किये जा सकेंगे जिसका लाभ सारे देश की जनता को मिलेगा परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में जिस प्रकार की कार्य पद्धति चल रही है वह यह नहीं दर्शा रही है कि निकट भविष्य में कोई बहुत अच्छा सन्देश आने वाला है इसलिये जितने भी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थापना के लिये लगे हैं उन्हें शान्त मन से सिर्फ यह चिन्तन करना चाहिये कि कदम वही उठाये जायें जो कदम चिकित्सा पद्धति के हित में हो साथ–साथ जो लोग रोज़ी और रोटी से जुड़े हैं उनका भी भला होता रहे इस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी से काम करने के लिये पूरे देश में राह खुल गयी है बशर्ते काम जिस राज्य में हो रहा हो उस राज्य के प्रचलित कानूनों के अन्तर्गत किया जा रहा हो, जब हम कार्य करेंगे तो आज नहीं तो कल सरकार को हमारे कार्यों का मूल्यांकन करना ही पड़ेगा, जैसा सब लोगों द्वारा दावा किया जाता है यदि उन दावों के 50 प्रतिशत भी हम कसौटी पर खरे उतरे तो सरकार ज़्यादा दिनों तक हमारी उपेक्षा नहीं कर सकती है, मान्यता का एक रास्ता यह भी है लेकिन इसे हम संयोग ही कहेंगे कि हमारे साथी इस रास्ते पर चलने को तैयार नहीं हो पा रहे हैं मान्यता के लिए जिस बिल की चर्चा बार–बार की जा रही है उसकी वास्तविकता यह है कि हमारे साथी इस बिल को पास कराने से ज़्यादा रूचि प्रचार में रख रहे हैं कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता है हर व्यक्ति यह सिद्ध करना चाहता है कि उससे ज़्यादा कोई भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का हितैषी नहीं है और साथ में यह भी बताना चाहता है कि अन्य लोग जो कार्य आज कर रहे हैं वह काम उसके द्वारा पहले ही किया जा चुका है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि 02 और 03 अगस्त, 2016 को किसी संस्था द्वारा केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रियों से सम्पर्क स्थापित किया गया कुछ चर्चा की गयी फोटो खिंचवाये गये और यह सारी की सारी गतिविधि सोशल मीडिया में इस प्रकार प्रचारित की गयी कि मानों इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की पूरी बात हो गयी है जब इस पूरे प्रकरण की जानकारी लेनी चाही गयी तो आयोजकों द्वारा एक वीडियों पिक्चर भेज दी गयी इस पिक्चर में जो कुछ भी था वह कहीं से भी सिद्ध नहीं कर रहा था कि मान्यता का प्रयास हो रहा है, इस वीडियो में दिखाया गया है कि केन्द्रीय आयुष मंत्री के कार्यालय में कुछ लोग गये उनसे मिले पुष्पगुच्छ दिया उनके साथ फोटो खिंचवाई और एक प्रास्पेक्टस का विमोचन करवाया यदि मान्यता का यही प्रयास है तो हमें यह कहने में संकोच नहीं है कि इस तरह के प्रयास सफलता के दायरे में संदिग्ध रहते हैं।

दूसरा चित्र जो प्रचारित किया जा रहा है उसमें मध्य में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री माननीय जे0 पी0 नड्डा साहब हैं उनके अगल–बगल ग्यारह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेतागण दिख रहे हैं, साथ में लिखा गया है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए बहुत अच्छी खबर है, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री से बिल पर चर्चा हुई सदन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी टीम का स्वागत हुआ स्वागत होना, मुलाकात होना दोनो अच्छी बातें हैं लेकिन बात क्या हुई ?बात का सन्दर्भ क्या था ?इसको भी स्पष्ट होना चाहिये। जैसे ही यह चित्र सोशल मीडिया पर आये अन्य नेतागण सोचने लगे कि हम पीछे क्यों रह जायें आनन–फानन में उत्तराखण्ड के एक नेता जी ने वर्ष 2014 की एक तस्वीर पोस्ट की और लिखा केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री के साथ सरकारी चिकित्सालय का निरीक्षण करते हुए। यहां पर लिखने का तात्पर्य यह है कि कोई भी किसी से पीछे नहीं रहना चाता है, हर व्यक्ति यह दिखाने का प्रयास करता है कि आज तुम जो कुछ भी कर रहे हो वह हम बहुत पहले कर चुके हैं। कार्य करना चाहिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी व्यक्ति विशेष की विरासत नहीं है इस चिकित्सा पद्धति पर हर व्यक्ति का समान रूप से अधिकार है और जो भी व्यक्ति जिस तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा करता है वह सम्मान का पात्र है। लेकिन आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जिस तरह की गतिविधियां दिखायी दे रही हैं वह तो यही प्रदर्शित कर रही हैं कि अभी तक जो कुछ भी किया गया वह बहुत कम था या उचित नही था, आज जो हमारे द्वारा किया जा रहा है वही ठीक है इसी भावना ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास अवरूद्ध कर रखा है कार्य संस्कृति प्रभावित हो रही है, नेताओं की कार गुज़ारियों से परस्पर विश्वसनीयता का भाव समाप्त हो रहा है, दोषारोपण की प्रवृत्ति बढ़ रही है परस्पर स्नेह के स्थान पर विद्वेष जन्म ले रहा है, जिस तरह की शब्दावली का प्रयोग हो रहा है वह स्तरीय नहीं कही जा सकती है, भाषा की मद्रता समाप्त होती जा रही है, एक दूसरे के विचारों को समझने के स्थान पर उसे बल्गर की संज्ञा दी जा रही है। इस तरह की परिस्थितियों से हमें बाहर आना ही होगा यदि हम अपने आप को इस विचार धारा से बाहर नहीं निकाल पाये तो हमें एक और संक्रमण के लिए तैयार रहना चाहिये, यह हम इस लिए लिख रहे हैं कि जो कुछ भी इस समय घट रहा है वह भविष्य का स्पष्ट संकेत दे रहा है, अभी भी समय है कि हम सब संभल कर कार्य करें और जो लोग परिस्थितियों वश या कारणोंवश दिशा भ्रमित हो रहे हैं उन्हें दिशा देनी होगी क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से खिलवाड़ से मतलब है लाखों लोगों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करना। रोज़ी रोटी तो आदमी कुछ भी करके चला लेगा लेकिन एक अच्छी चिकित्सा पद्धति जिसके विकास से पूरे विश्व की मानवता का लाभ होना है उस लाभ से जो लोग वंचित करेंगे वह समाज में कभी भी सम्मान के पात्र नहीं हो सकते हैं। लोकसभा और राज्य सभा के चक्कर लगाने से अच्छा होगा कि पूरे समाज में एक ऐसी कार्य संस्कृति को जन्म दिया जाये जिससे कि सम्पूर्ण समाज लाभान्वित हो, मोह जीवन का अभिन्न अंग है लेकिन मोह तभी तक उचित है जबतक वह हानि न पहुँचाये।हर व्यक्ति को अपने शरीर से बहुत प्रेम होता है शरीर के हर अंग का महत्व होता है लेकिन अगर किसी अंग में सड़न पैदा हो जाये तो उस अंग को हटा देने में ही बुद्धिमानी होती है अन्यथः वह अंग शरीर के दूसरे अंगो को भी प्रभावित कर देता है। ठीक इसी तरह से मान्यता के बिल से मोह तो करिये लेकिन इतने लिप्त न हो जाइये कि कार्य से ही दूर हो जायें।

खुद ही गुम हो गये * दास्तां कहते–कहते

किसी भी चीज़ व समाज को जीवित रहने के लिए आवश्यक होता है कि उसकी अच्छाईयों और बुराईयों के बारे में आम जन को पता लगता रहे जिससे कि उसके भविष्य का मार्ग सुगम और सुदृढ़ होता रहे, यह काम संवाद के माध्यम से ही सम्भव होता है, चूंकि संवाद एक दूसरे के पास पहुँचने से ही कार्यों की समीक्षा होती है लोगों के दृष्टिकोंण आते हैं समाज हमें किस तरह से स्वीकार कर रहा है इसकी भी जानकारी हमें इसी माध्यम से होती है और यह काम बखूबी निभाते हैं समाचार पत्र। समाचार पत्रों को विचारक अपनी–अपनी तरह से परिभाषित करते हैं कोई उसे समाज का दर्पण कहता है, तो कोई उसे समाज सुधार का माध्यम मानता है, तो कोई उसे समाज के दायित्व निर्वाहक के रूप में स्वीकार करता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी समाचार पत्रों का विशेष योगदान है इन्ही समाचार पत्रों के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गतिविधियों के बारे में जानकारी होती है लगभग आज से 100 वर्ष पूर्व इलेक्ट्रो होम्योपैथी में समाचार पत्रों के छपने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था प्राप्त जानकारी के आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे पहला समाचार पत्र डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना द्वारा लखनऊ में 1907 में प्रकाशित करवाया गया था इस समाचार पत्र का नाम रिसाला माहनामा इलेक्ट्रो होम्योपैथी था इसका प्रकाशन मात्र 5 वर्ष तक रहा 1912 में निजी कारणों से इस मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया, लेकिन एक बार जो सिलसिला शुरू हो जाता है तो वह कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में चलता ही रहता है इस सिलसिले को डा0 नन्दलाल सिन्हा ने जारी रखा डा0 नन्दलाल सिन्हा द्वारा 2 समाचार पत्रों का प्रकाशन किया गया जिनका नाम था मेडिसिनर उसके बाद मार्डन रेमेडीज़ नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया यह दोनों समाचार पत्रिकायें अंग्रेजी भाषा में थीं जन सामान्य तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात को पहुँचाने के लिए डा0 नन्दलाल सिन्हा द्वारा(Perfect Health) स्वास्थ्य रक्षा नामक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में किया गया इस पत्रिका ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी में क्रान्तिकारी कार्य किया चूँकि ये सारी की सारी पत्रिकायें आज़ादी के पहले की थीं इसलिए इनका कार्यक्षेत्र आज के पाकिस्तान, बंगलादेश, सिलोन (अब श्रीलंका) तक था उस समय इन पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों के मध्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समाचार पहुँचते थे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में जानते थे इसका लाभ डा0 नन्दलाल को यह हुआ कि पूरे विश्व से लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखने की इच्छा से डा0 सिन्हा से जुड़ने लगे और एक तरह से सम्पूर्ण विश्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पहचान धीरे–धीरे होने लगी।

देश की आज़ादी के बाद कुछ दिनों तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अजीब सी खमोशी रही, कानपुर के बाद पटना इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे महत्वपूर्ण शहर हो गया था पटना के ही डा0 ब्रजबिहारी प्रसाद सिंह द्वारा मेडिसिनर नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया इसी क्रम में पटना के ही डा0 सी0 डी0 मिश्रा "प्रभाकर" द्वारा भी एक इलेक्ट्रो होम्योपैथी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया देश के अन्य कोनों से भी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हो चुका था। 1953 से लेकर 1969 तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में आन्दोलनों का दौर चला कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ जो आज गुमनाम हो चुके हैं डा0 मुकुट बिहारी सिन्हा, डा0 मुरारी शरण श्रीवास्तव,डा0 युद्धवीर सिंह, डा0 मोरध्वज सिंह प्रलयंकर, डा0 एस0 एम0 ए0 अज़ीज़, डा0 रमाशंकर, डा0 एस0 एन0 झा आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिन नामों की कभी तूती बोलती थी।

आज की पीढ़ी में यह तो अप्रांसगिक हो चुके हैं लोग इनके बारे में जानना तक पसन्द नहीं करते इन सारे के सारे स्तम्भों की प्रतिमा को हम नमन करते हैं और मन यही कहता है कि जाने कहां गये ये लोग जिन लोगों ने इलेक्ट्रोहोम्योपैथी की दस्तान कही धीरे–धीरे गुमनाम होते जा रहे हैं लेकिन इतिहास कभी भी किसी को नहीं भूलता और समय आने पर हर व्यक्ति के कार्यों का सम्मान होता है और यह कार्य करता है समाचार पत्र। आज जो लोग इन महान लोगों को भूलने का प्रयास कर रहे हैं ऐसे लोगों के लिए यह दो पंक्तियां समर्पित हैं ....

जैसे भूलों के पृष्ठों को नही माफ़ करता इतिहास,
अन्धकार की सीमा पर ही स्वागत पाता है प्रकाश।

इन प्रकाश पुंजों के कार्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इतिहास में सदैव अंकित रहेंगे समाचार पत्रों के प्रकाशन का सिलसिला धीरे–धीरे बढ़ता चलता गया और उनका दायरा भी बढ़ता गया लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से 14 जनवरी, 1979 को कानपुर से डा0 एम0 एच0 इदरीसी द्वारा इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया इस पत्रिका ने जनता के बीच पैठ बनानी शुरू की, स्पष्ट और साफ सुथरी बात होने के कारण लोग बाग इस पत्रिका को प्रसन्द करने लगे, बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए प्रकाशक द्वारा इस त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन की अवधि घटाकर मासिक कर दी, धीरे–धीरे पूरे देश में इस पत्रिका की मांग होने लगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक और समर्थकों की मांग पर इस पत्रिका को पाक्षिक करना पड़ा आज यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में सर्वाधिक प्रसारित व पढ़ी जाने वाली एक मात्र पत्रिका है।

38 वर्षों से इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन हो रहा है, 2003 से 2012 के कालखण्ड में जब बड़े–बड़े इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दिग्गज अपनी गतिविधियों से किनारा कर रहे थे पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट का प्रकाशन तब भी नियमित जारी रहा इसी प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल न्यूज, स्वास्थ्य घोष, चिकित्सा पल्लव नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ उत्तर प्रदेश के अलावा राजस्थान, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड,चेन्नई आदि राज्यों से भी विभिन्न तरह की पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ यह अलग बात है कि आज तक किसी भी संगठन या समूह द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ नहीं किया गया है। वैसे किसी भी चिकित्सा पद्धति के लिए इस तरह के दैनिक समाचार पत्रों को निकालना अपने आप में एक टेढ़ी खीर है आज नियमित रूप से सिर्फ पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट का ही प्रकाशन हो रहा है इस समाचार के माध्यम से प्रकाशक मण्डल का यह पूरा प्रयास होता है कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सम्बन्धित जो भी घटनायें घटित हो रही हैं उनकी जानकारी पाठकों तक पहुँचायी जाये विभिन्न संगठनों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में क्या कार्य किये जा रहे हैं ?इनकी जानकारी भी बिना किसी भेदभाव के नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है। आज कल इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता की गतिविधियां बहुत तेज़ी से फैल रही हैं इस सच और झूठ की जानकारी भी गज़ट के माध्यम से चिकित्सकों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है हमारा प्रयास होता है कि जिन विभूतियों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य किया है उनकी जानकारी सब तक पहुँचे।

निष्पक्ष पत्रकारिता के कारण ही यह समाचार पत्र निरन्तर लोकप्रियता की नई ऊचाईयां छू रहा है, सम्पादक मण्डल इस बात में पूरी सतर्कता बरतता है कि किसी भी तरह से ऐसा कोई समाचार प्रकाशित न किया जाये जिस से समाचार की विश्वसीनता संदिग्ध हो, चिकित्सकों के नये ज्ञानार्जन के लिए यह प्रयास किया जाता है कि कुछ ऐसे वैज्ञानिक और तथ्यपरक लेख प्रकाशित किये जायें जिससे चिकित्सकों का ज्ञानार्जन हो साथ–साथ ऐसे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के अनुभव भी प्रकाशित करने का प्रयास करते हैं जिन्होंने प्रैक्टिस के समय में अर्जित किये हैं।

भ्रामक प्रचार से दूर रहें !

मात्र मान्यता का बिल सदन में आने से चिकित्सा पद्धति को मान्यता नहीं मिल सकती

21 जून, 2011 व 4 जनवरी, 2012 के आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा, शिक्षा, अनुसन्धान एवं प्रैक्टिस की अनुमति देते हैं

आखिर उ0प्र0 में मान्यता के आन्दोलन क्यों नहीं होते ?

पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का आन्दोलन बड़े ज़ोर शोर से चलाया जा रहा है हर संगठन जो इस कार्यक्रम से जुड़ा हुआ है वह अपने-अपने स्तर से इस आयोजन को संचालित कर रहा है, कुछ संगठन आन्दोलन के माध्यम से मान्यता दिलाने का कार्य कर रहे हैं और कुछ संगठन लोक सभा में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल लाकर मान्यता दिलाने का प्रयास कर रहे हैं, पूरे देश में एक ऐसा वातावरण निर्मित किया जा रहा है जिससे ऐसा लग रहा है कि मानो मान्यता हमारी झोली में आ गिरी हो, इस समय पूरा इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज एक बार फिर ऐसे भ्रमजाल में फंस गया है जिससे निकलना अतिआवश्यक है अन्यथः जिस तरह से कुत्सित प्रयास जारी हैं वह इस चिकित्सा पद्धति को कहीं न कहीं से नुकसान पहुँचा सकती हैं।

आजकल जो प्रयास जारी हैं अगर हम आंकलन करें कि यह कौन से लोग हैं ?जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के आन्दोलन को हवा दे रहे हैं तो साफ-साफ नज़र आने लगेगा कि यह वही सब लोग हैं जो वर्ष 2003 के पहले तक उ0प्र0 की धरती को ही अपना कर्मस्थली मानते थे सामान्यजन को दिखाने के लिये तो यह लोग आज भी ऐसा प्रदर्शित करते हैं कि यह उ0प्र0 के लिये ही कार्य कर रहे हैं, सत्यता तो यह है कि इस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी दो धड़ों में बंटी हुई है, एक वह लोग हैं जिनके पास कार्य करने का अधिकार है और दूसरे वे लोग हैं जो अधिकार पाने के लिये अभी भी संघर्षरत हैं, इनसे वह लोग भी आकर जुड़ गये हैं जो अधिकार पाने की उम्मीद छोड़ चुके हैं अब सिर्फ अपना अस्तित्व जनाने के लिये ऐसे आन्दोलनों से आकर जुड़ जाते हैं। आन्दोलन करना बुरी बात नहीं है हम तो शुरु से ही कहते आये हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्वयं में एक आन्दोलन है और इसे सतत चलते रहना है तभी प्रगति सम्भव है और प्रगति के लिये कार्य ही आधार होता है, कार्य एवं गुणवत्ता के आधार पर ही सरकारें मान्यता दिया करती हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी वस्तुतः एक बहुत अच्छी चिकित्सा पद्धति है, लाभकारी, गुणकारी होने के साथ-साथ अहानिकर व त्वरित प्रभावी भी है।

इतनी अच्छी गुणवत्ता के उपरान्त भी हम आज तक सरकार को प्रभावित नहीं कर सके इससे यह सिद्ध होता है कि निश्चित तौर पर जो हमारा चिकित्सकीय आन्दोलन है उसकी गति बहुत मध्यम है, जिस स्तर का कार्य होना चाहिये उस स्तर का कार्य नहीं हो पा रहा है, वर्ष 2011 से पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने की पूरी आज़ादी है खास तौर पर उ0प्र0 में उत्तर प्रदेश सरकार ने तो बाकायदा 04 जनवरी, 2012 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा, ।अनुसंधान एवं प्रैक्टिस करने के लिये शासनादेश जारी कर रखा है और यह शासनादेश जारी हुआ था।

प्रदेश की एकमात्र विधि सम्मत ढंग से स्थापित संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के नाम।

सबसे अच्छी बात तो यह है कि प्रदेश सरकार स्वयं यह चाहती है कि प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी फले-फूले सरकारी अधिकारी शासनादेश का अनुपालन करें इस हेतु 02 सितम्बर, 2013 व 14 मार्च, 2016 को प्रदेश के चिकित्सा महानिदेशक ने अपने अधीन सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि 04 जनवरी, 2012 का अनुपालन शासकीय आदेशा नुसार होना चाहिये। अब होना तो यह चाहिये कि जितने भी नेतागण उ0प्र0 में काम कर रहे थे या काम कर रहे हैं वे अपनी पूरी ऊर्जा के साथ एक ऐसा आन्दोलन चलाते जिससे कि प्रदेश के हर कोने-कोने से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक निकल कर अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में करते तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को एक नई गति मिलती। सरकारी पदों पर विराजमान अधिकारीगण जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये गलत धारणा रखते हैं और आदेशों का पालन करने में कोताही बरतते हैं तब ऐसे अधिकारियों के विरुद्ध अभियान चलाया जाता और आन्दोलन के माध्यम से प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री के संज्ञान में लाया जाता यदि तब भी काम नहीं होता तो एक ज़बरदस्त आन्दोलन चलाया जाता लेकिन पता नहीं क्यों हमारे नेतागण उ0प्र0 की ज़मीन पर काम करना पसन्द नहीं करते।

इसके दो ही कारण हो सकते हैं या तो उन्हें यह विश्वास हो चुका है कि उ0प्र0 में उन्हें कार्य करने का अवसर नहीं मिलना है या फिर चिकित्सकों की समस्याओं का समाधान उनके पास नहीं है। कभी उ0प्र0 आन्दोलन की मुख्य भूमि हुआ करती थी पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जितने भी आन्दोलन हुआ करते थे उनका नेतृत्व उत्तर प्रदेश ही किया करता था, ऐसा क्यों है ? इतनी निराशा क्यों है ? हँसी तो तब आती है जब यह दिखता है कि कल तक जो पूरे देश का नेतृत्व करने का दम भरा करते थे आज उनके भी सुर बदले हुये हैं। हम कहीं पर हैं यह दिखाने के लिये किसी का सहारा लेना पड़ रहा है, जो लोग यह भ्रम फैला रहे थे कि जो उ0प्र0 के नेतृत्वकर्ता थे वे अब थक चुके हें या चुक गये हैं ऐसे लोगों के समूह ने नये लोगों को नेतृत्व की जिम्मेदारी दी, आन्दोलन के सारे पैतरे सिखाये लेकिन क्या हुआ ?यह- सब आप पिछले दो वर्षों से देख रहे हैं हमें बताने की ज़रुरत नहीं है, आन्दोलन के नाम पर कौन-कौन से जुगत नहीं किये गये, क्या-क्या झूठ नहीं बोला गया, भ्रम फैलाने की पराकाष्ठा हो गयी। आरोपों-प्रत्यारोपों का स्तर इतना गिर गया कि परस्पर वैमनस्यता का भाव पैदा हो गया और चिकित्सकों के मध्य जो सन्देश गया उससे विश्वसनीयता का प्रतिशत गिरकर शून्य हो गया है, कार्य करने की गति निरंकुश हो गयी है कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है कि शायद किसी अदृश्य अराजकता ने जन्म ले लिया है अगर शीघ्र ही स्थिति पर नियन्त्रण नहीं किया गया तो परिणाम क्या होगा ? इसकी कल्पना से ही डर लगता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के पंजीयन हेतु नई व्यवस्था का प्रयास प्रारम्भ

प्रदेश में विधिसम्मत ढंग से चिकित्सा करने के लिये व्यवस्था है कि चिकित्सक को अपनी परिषद में पंजीकृत होने के साथ-साथ जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन का आवेदन देना होता है लेकिन 03 अगस्त, 2016 को शासन ने एक संशोधित आदेश जारी किया है जिससे कि व्यवस्था में परिवर्तन आ चुका है वर्तमान व्यवस्था से सी0 एम0 ओ0 से आयुर्वेद/यूनानी एवं होम्यापैथ डाक्टर मुक्त हो चुके हैं। एलोपैथ (अंग्रजी एम0बी0बी0 एस0) को छोड़कर अन्य विधाओं के डाक्टर अपने विभागों के नियन्त्रण में रहेंगे,पहले सभी विधाओं के डाक्टरों को सी0 एम0 ओ0 कार्यालय में पंजीकरण कराना होता था। आयुर्वेद, यूनानी और होम्योपैथ डाक्टरों को सी0 एम0 ओ0 कार्यालय में पंजीयन का नियम होने के कारण इन विभागों की महत्ता नहीं थी, सी0 एम0 ओ0 कार्यालय पर पहले से ही ज़्यादा बोझ होने के कारण एलोपैथ को छोड़कर अन्य विधाओं के डाक्टरों की मानीटरिंग नहीं हो पाती थी अब शासन ने नया संशोधित आदेश जारी कर सभी व्सवस्था स्पष्ट कर दी है अब स्थिति यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के पंजीयन का अधिकार सी0 एम0 ओ0 के स्थान पर बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के नियन्त्रण में जनपद स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नामित अधिकारी को दिया जाये इसके लिये बाकायदा प्रयास तेज़ कर दिये गये हैं बोर्ड इस बात के लिये प्रयासशील है कि अन्य विधाओं की भाँति इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के लिये कोई व्यवस्था निश्चित हो ताकि पारदर्शिता आ सके और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को कार्य करने में और अधिक सुग्रहिता का अवसर मिले लेकिन जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सक्षम अधिकारी नियुक्त नहीं किया जाता है तब तक हर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में करें। जो चिकित्सक अभी तक इस क्षेत्र में शिथिल हैं वे सक्रियता के साथ पंजीयन का आवेदन प्रेषित कर दें अन्यथः यू0 पी0 क्लीनिकल स्टैब्लिशमेन्ट (रजिस्ट्रेशन एण्ड रेगुलेशन) रुल्स 2016 के प्रभाव में आते ही ऐसे चिकित्सक जिन्होंने पंजीयन हेतु आवेदन नहीं दे रखे हैं उनकी प्रैक्टिस में संकट के बादल मंडरा सकते हैं इसलिये अभी भी जिन चिकित्सकों ने यह कार्य नहीं किया है वे चिकित्सक प्राथमिकता के आधार पर पंजीकरण का आवेदन अवश्य प्रस्तुत कर दें।

आपको यह नहीं भूलना चाहिये कि शासन दिनोंदिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमतिकरण के लिये सक्रिय है यह आभास किसी को भी नहीं है कि प्रदेश सरकार किसी दिन कोई महत्वपूर्ण आदेश निर्गत कर सकती है उस समय जो चिकित्सक निश्चित सीमाओं के अन्दर नहीं आयेगा उसे व्यर्थ की परेशानी झेलनी पड़ सकती है या यह भी सम्भव है कि वह चिकित्सक भविष्य में प्रैक्टिस ही न करने पाये, अस्तु समय रहते अपनी सारी व्यवस्थायें ठीक कर लें अन्यथः हर परिस्थित के जिम्मेदार आप स्वयं होंगे। बोर्ड चाह कर भी आपकी कोई मदद नहीं कर पायेगा यदि विधि सम्मत ढंग से प्रैक्टिस करनी है तो प्रचलित नियमों का पालन करना ही पड़ेगा।

स्वंतन्त्रता का मतलब समझना होगा

जबतक गज़ट का यह अंक आपके हाथों में होगा देश 70 वां स्वतन्त्रता दिवस मना चुका होगा और हम सब आज़ादी के जश्न में बराबर के हिस्सेदार भी रहे होंगे लेकिन हम सब ने स्वतन्त्रता का मतलब अब तक नहीं समझा चूँकि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं इसलिये हमारी स्वतन्त्रता भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ी है लोग कहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कानून नहीं है, यह सत्य है कि अभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कानून नहीं है लेकिन यह देश कानून का है यहाँ कानून का राज है हर काम कानून के अन्तर्गत होते हैं तो फिर इलेक्ट्रो होम्योपैथी उससे अलग कैसे हो सकती है ? डिग्री, डिपलोमा देने प्रैक्टिस करने व दवा बनाने के कुछ नियम हैं ऐसा नहीं है कि जिसकी जो मरज़ी हो वह करे इसलिये जिसका भरोसा ऐसी स्वतन्त्रता पर है कि हमें मन मर्ज़ी करनी है उन्हें स्वतन्त्रता शब्द के अर्थ समझनें होंगे।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्वतन्त्रता से आशय होता है कि प्रचलित नियमों व कानूनों का पालन करते हुये स्वतन्त्रता पूर्वक पूरी अधिकारिता से कार्य करें -
"स्वतन्त्रता दिवस की बधाई।"